JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आज़ादी का अमृत महोत्सव : स्वाधिनता संग्राम में महिलाओं के योगदान पर समीक्षात्मक अध्ययन

***डॉ0 अनिता वर्मा**

***एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, महिला विद्यालय पी.जी. कालेज, लखनऊ**

सारांशिका :

आजादी का अमृत महोत्सव स्वतंत्रता आन्दोलन और आजादी के बाद 75 साल की यात्रा का प्रतिबिंब है। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के 75 हफ्ते पहले, 12 मार्च 2021 को केन्द्र सरकार में आज़ादी के अमृत महोत्सव का आगज़ किया था, जो कि 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। आजादी के 75 साल की यात्रा में हमें विशेषतः अपने संविधान पर गर्व है, लोकतांत्रिक परंपराओं पर गर्व है। ज्ञान विकास से समृद्ध भारत मंगल से चन्द्रमा पर अपनी छाप छोड़ रहा है। भारत की आज़ादी को प्राप्त करने में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन (1857–1947) तक भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने के लिये पुरूषों के साथ महिलाओं ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता संग्राम में अधिक महिलाओं को शामिल करना महात्मा गांधी का निर्णय था, क्योंकि महिलायें अधिक धैर्य और सहनशील होती है। जिससे हिंसा ज्यादा नहीं भड़केगी। इसी वजह से देश भर की महिलायें बड़े पैमाने पर स्वतंत्रता आंन्दोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित हुई, जो आज की नारी के लिए मिसाल है। इस आजादी में अमृत महोत्सव के अवसर पर इस शोध अध्ययन के माध्यम से इन वीरांगनाओं की शौर्य गाथा को याद करते हुये श्रद्धांजलि और शत–शत नमन है।

कुजी शब्द : अमृत महोत्सव, महत्व, गतिविधियां, महिलाओं का योगदान।

परिचय :

जब हम गुलामी के उस दौर की कल्पना करते है, जहां करोड़ों लोगों ने सदियों तक गुलामी के बेड़े से आज़ादी की एक सुबह का इंतजार किया था, तब ये अहसास और बढ़ता है कि आज़ादी के 75 साल का अवसर कितना एतिहासिक और गौरवशाली है। इस पर्व में शाश्वत भारत की परम्परा भी है, स्वाधिनता संग्राम की परछाई भी, आजादी अमृत महोत्सव एक उत्सव है, जिसमें उन्नत भारत के 75 साल और उसकी संस्कृति, लोगों की उपलब्धियों के शानदार इतिहास का सम्मान और स्वतंत्रता का जश्न बनाने के लिए भारत सरकार की एक बहुत अच्छी पहल है। इस उत्सव में उन सभी यादों को ताजा किया जा रहा है, जो आज़ादी के समय में घटित हुई थी, जिन्होंने आज़ादी के लिए लड़ाई में कुर्बानी दी। इसके अतिरिक्त

स्वतंत्रता सें सम्बन्धित मुख्य स्थलों को दिखाया जा रहा है। इस महोत्सव में उन सभी विस्मृत नायकों को याद किया जा रहा है, जो इतिहास के पन्नों में कही खो गये हैं।

15 अगस्त 2022 को देश के आजादी में 75 वर्ष पूरे हो जायेगें। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने के 75 हफ्तें पहलें 12 मार्च 2021 को केन्द्र सरकार ने आजादी के अमृत महोत्सव का आगज़ किया, जो 15 अगस्त 2023 तक चलेगा। इस अमृत महोत्सव की शुरूआत प्रधानमंत्री ने साबरमती आश्रम के दांडी यात्रा को हरी झंडी दिखाकर की, क्योंकि यहीं से महात्मा गांधी के नेतृत्व में डांडी यात्रा शुरू किया गया था। आजादी के 75 वर्ष पूरे होने तक अर्थात 15 अगस्त 2022 तक पूरे देश में विभिन्न कार्यक्रम का आयोजन हो रहा है, जो भारत की स्वतंत्रता संग्राम के प्रमुख केन्द्र जैसेः—साबरमती आश्रम, पंजाब का जलियावाला बाग, अडंमान और निकोबार की द्वीप समूह का सेलुलर जेल आदि। महोत्सव के इस कार्यक्रम के लिये 259 सदस्य की एक उच्च स्तरीय समिति का भी गठन किया गया। आज़ादी के अमृत महोत्सव के तहत कुछ एतिहासिक पहल भी है, जैसेः—घर घर झंडा, अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस, स्वतंत्र स्वर और 'मेरा गांव मेरी घरोहर' के संदर्भ में सबकी व्यापक भागीदारी अपेक्षित है।

उद्देश्य :

शोध आलेख में निम्न बिन्दुओं पर अवलोकन किया गया है —

- आज़ादी के अमृत महोत्सव द्वारा देश के लोग युवा और बच्चे सभी उन महावीर योद्धाओं को जान सकेंगे, जो इतिहास के पन्नों में कही दबे पड़े हैं।
- इस अवसर पर देशभर में आयोजित प्रदर्शनियों में असहयोग आन्दोलन, सविज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ों आन्दोलन में डांडी यात्रा के साथ, महात्मा गांधी, सुभाष चन्द्र बोस आदि अन्दोलन में इन नेताओं सहित स्वतंत्रता से सम्बन्धित मुख्य स्थलों को दिखाया जायेगा।
- भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में केवल पुरूषों की हिस्सेदारी को फतह नहीं की गई है, बल्कि इन महायज्ञ में महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय हैं।
- इस कार्यक्रम का उद्देश्य स्वतन्त्रता आंदोलन से जुड़े देशभक्ति के उत्साह को फिर से जागृत करना, और नवीनीकृत करना, स्वतन्त्रता सेनानियों के योगदान को याद करना और इण्डिया @2047 के लिये विजन तैयार करना है।
- असंख्य महिलाओं ने स्वतंन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने के कारण आजादी का यह महान आन्दोलन सक्रिय बन पड़ा। शांतिप्रिय आंदोलन से लेकर क्रान्तिकारी आंदोलनों में महिलाओं की महत्वूपर्ण भूमिका रही है। आज की महिलाओं को उनकी वीरगाथा से प्रेरित करना ।

आजादी के अमृत महोत्सव का अर्थ एवं महत्व :

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि महोत्सव का अर्थ है, स्वतंत्रता की उर्जा का अमृत, स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं की प्रेरणा का अमृत, नये विचारों और प्रतिज्ञाओं का अमृत और आत्मनिर्भरता का अमृत। इसीलिये यह महोत्सव राष्ट्र का पर्व है, वैश्विक शांति और विकास का त्यौहार है। आजादी के 75 साल और इसमें लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास का सम्मान और जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की बहुत अच्छी पहल है। आजादी के अमृत महोत्सव की अधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को दांडी यात्रा (1930 ई0 को नमक पर ब्रिटिश एकाधिकार के खिलाफ और अंहिसक विरोध के प्रत्यक्ष कार्यवाही

अभियान) शुरू हुई और 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगी। यह महोत्सव उन भारतीयों को समर्पित है, जिन्होंने न केवल भारत को अपनी विकास यात्रा में आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और जो आत्मनिर्भर भारत की जीवतंता से प्रेरित हैं। इसके अलावा आजादी का अमृत महोत्सव भारत की राजनीतिक, सामाजिक सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान के बारे में प्रगतिशील है। यह अमृत महोत्सव भारत की स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े सेनानियों को श्रद्धाजंलि देने के लिये मनाया जा रहा है। इसके अलावा इस उत्सव के दौरान भारतीय, भारत स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान सभी महत्वपूर्ण स्थलों को याद करेगें। इस प्रकार आजादी का अमृत महोत्सव स्वतेत्रता के मूल्य के अमृत को याद दिलाता है।

यह महोत्सव स्वतंत्रता योद्धाओं, नये दृष्टिकोणों, नये संकल्पों और आत्मनिर्भरता की प्रेरणा को प्रतिनिधित्व करता है। इसके अलावा इसका उद्देश्य दुनिया के लिय स्वतन्त्रता आंदोलन की उपलब्धियों को प्रदर्शित करना है। इस प्रकार यह महोत्सव सबका साथ, सबका विकास, सबका प्रयास के प्रधानमंत्री मोदी जी के आईना से प्रेरित है, जिसमें सरकार की सरकारी नीति, योजनाओं के साथ–साथ व्यवसायों, गैर सरकारी संगठनों आदि को शामिल किया गया है, जो सामूहिक रूप से बेहतर कल बनाने में मदद करेगें।

आजादी के अमृत महोत्सव की गतिविधियां :

आजादी के अमृत महोत्सव के कार्यक्रम की श्रृंखला के अन्तर्गत केन्द्र, राज्य, जिले, संस्थान आदि में अपने–अपने तरीकें से इन महोत्सव को अभिप्रेरित होकर एक पर्व के रूप में मना रहा है। जैसे –प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अमृत महोत्सव के लिये एक वेबसाइट का उद्घाटन किया।

– राइजर इंडिया@75 के थीम के तहत अनेक गतिविधियाँ अपेक्षित है, जैसे –एक वेबसाइट, फिल्म, गीत, आत्मनिर्भर इनक्यूबेटर और आत्मनिर्भर चरखा आदि।

– केन्द्र सरकार में केन्द्रीय मंत्री अमित शाह के नेतृत्व में एक बोर्ड का गठन किया है, जो पैनल उत्सव के लिये नीतियों और विभिन्न कार्यक्रमों की योजना का मसौदा तैयार करेगा। महोत्सव के इन कार्यक्रमों के सफल संचालन के लिये 259 सदस्य की उच्च स्तरीय राष्ट्रीय समिति का गठन भी किया गया है।

– तामिलनाडु और कर्नाटक में स्वतंत्रता सेनानियों को याद करने के लिये प्रदर्शनियों, साइकिल जत्था, वृक्षापरोपण और जुलूस निर्धारित किये गये हैं।

– राजस्थान में क्षेत्रीय आउटरीच ब्यूरो ने पांच दिवसीय हस्तशिल्प प्रदर्शनी का आयोजन (आत्मनिर्भर की प्रेरणा) किया।

– मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े क्षेत्र सहित प्रदेश के सभी 52 जिला कार्यलयों में तथा तात्या टोपे, चन्द्रशेखर आजाद के साथ दुर्गावती की मातृभूमि जब्बलपुर के कार्यालयों में स्वतत्रंता के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन हो रहा है।

– आजादी के अमृत महोत्सव के अन्तर्गत महाराष्ट्र में मुबई सेन्ट्रल चिड़ियाघर प्राधिकरण द्वारा 'संरक्षण से सह–अस्तित्व : द पीपल कनेक्ट' नामक आउटरीच पहल की गई है, जिसका लक्ष्य 75 जंगली जानवरों की प्रजातियों की रक्षा के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

–उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत अमृत महोत्सव के अन्तर्गत, मुख्यमंत्री योगी ने सर्वप्रथम लखनऊ स्थित विख्यात शहीद स्थल काकोरी में वर्तमान पीढ़ी को स्वतंत्रता आंदोलन से रूबरू कराया। प्रदेश के सभी जिलों में आजादी के आंदोलन की प्रमुख तिथियों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के जरिये ज्ञात एवं अज्ञात शहीदों को श्रद्धाजंलि अर्पित की जा रही है।

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार इस अवसर पर रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता द्वारा निम्नलिखित विषयों पर अपने विचारों को रचनात्मक ढंग से प्रस्तुत करने के लिये कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे है, जैसे –

- स्वदेशी से आत्मनिर्भर भारत : भारतीयों की यात्रा
- राज से स्वराज : महत्वपूर्ण घटनायें
- राज से स्वराज : जानी अनजानी हस्तियां और उनका योगदान।
- राष्ट्र का निर्माण : प्रतीक /साहित्य/मेले/कवितायें/वस्त्र
- राष्ट्र का निर्माण : विज्ञान, तकनीक/उद्योग शिक्षा
- आजादी का अमृत महोत्सव : मेरा प्रेरक व्यक्तिव, मेरी प्रेरक घटना/ आजादी पर मेरा विचार

महिलाओं का स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी :

भारत की आजादी के 75 साल पूरे होने के मौके पर देश में आजादी का अमृत महोत्सव मनाया जा रहा है। देश के हर राज्य, जिले और कस्बे में हर कोई इस आजादी के जश्न को अपने–अपने तरीके से मना रहा है। आजादी के अमृत महोत्सव में भारत की आजादी दिलाने वाले अमर शहीदों को याद किया जा रहा है। भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव जैसे स्वतंत्रता सेनानियों ने हंसते–हंसते फांसी के फंदे को गले लगा लिया। लेकिन भारत की भूमि पर ऐसी कई महिलाऐं भी हुई जिन्होने आजादी की लौ को जलाये रखा। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के लड़ाई में केवल पुरूषों की हिस्सेदारी की फतह नहीं की गई है, बल्कि इस महायज्ञ में महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय रही है। असंख्य महिलाओं के स्वतंत्रता आंदोलन में भागीदारी के कारण ही आज़ादी का यह महान आन्दोलन सक्रिय बना। स्त्रियों ने देश के प्रति प्रेम भाव का परिचय देते हुये स्वतंत्रता सेनानियों ने आज़ादी के लिये पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष किया। भारत में ऐसी कई क्रांतिकारी वीरांगनायें हुई हैं, जिन्होंने एशो आराम की जिन्दगी को त्याग करके स्वतंत्रता संग्राम के मैदान में कूद पड़ी। इनमें से कुछ महिलाओं का स्वतन्त्रता आंदोलन में अपना विशेष सक्रिय योगदान रहा है जैसे :

रानी लक्ष्मीबाई : देश की आज़ादी में किसी महिला क्रांतिकारी में सबसे पहले झांसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम आता है। देश की पहली महिला क्रांतिकारी रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी धरती और अपने बेटे की रक्षा के लिये अंग्रेजों से आखिरी सांस तक लड़ाई की। एक महिला पीठ पर बच्चे को टांगे हाथ में अपनी धारदार तलवार लिये सैकड़ों अंग्रेज सैनिकों के सामने डटकर खड़ी रही। 1857 में ही उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया, और ब्रिटिश राज और अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते हुये शहीद हो गई। परन्तु अपने जीते जी अंग्रेजों को अपने राज्य पर कब्जा नहीं करने दिया। उनका जीवन हर नारी के लिये मिसाला है, उनका नाम

सशक्त नारी का पर्याय बन चुका है उनके अप्रतिम शौयै से चकित अंग्रेज भी उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह पाये।

दुर्गावती देवी : दुर्गावती देवी को इतिहास में दुर्गा भाभी के नाम से जाना जाता है। वे देश के आजादी के लिये उनसे कंधे से कंधा मिलाकर लड़ती रही और हर आक्रमक योजना की वे हिस्सा बनी। उन्होंने बम बनाना भी सीखा था। जब देश के सपूत अंग्रेजों से लोहा लेने के लिये घर से निकलते थें। तो उन्हें टीका लगाकर भेजती थी। उन्हें गुलाम भारत का 'आयरन लेडी' कहा जा सकता है। लाला लाजपत राय की मौत के बाद उनका गुस्सा इस कदर हावी था कि वे स्वंय स्कॉर्ट को जान से मारना चाहती थी, पर उन्हें यह मौका नहीं मिला। स्कॉर्ट की हत्या में बाद में वे भगत सिंह की पत्नी बनकर अंग्रेजों से मुकाबला करने के लिये उनके प्लान का हिस्सा जरूर बनी।

सुचेता कृपलाणी : आज़ाद भारत की पहली मुख्यमंत्री सुचेता कृपलानी देश की आज़ादी के लिये भी आन्दोलन में भाग लिया। सुचेता भारत छोड़ों आंदोलन के दौरान प्रथम मोर्चे पर खड़ी थी और कई बार जेल भी गई। देश को आजाद कराने में उन्होंने अपना योगदान दिया था। भारत विभाजन के समय हुये दंगों में उन्होंने महात्मां गांधी के साथ मिलकर कार्य किया। इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल होने के बाद उन्होंने राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

विजयलक्ष्मी पंडित : विजयलक्ष्मी पंडित जवाहरलाल नेहरू की बहन थी, लेकिन देश की आजादी के लिये वह स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी। सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने पर उन्हें जेल भी जाना पड़ा, भारत की राजनीति के इतिहास में विजयालक्ष्मी पंडित पहली महिला मंत्री बनी। इतनी ही नहीं संयुक्त राष्ट्र की पहली महिला राष्ट्रध्यक्ष और स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत बनी।

कस्तूरबा गांधी : कस्तूरबा गांधी अपने पति से कभी पति धर्म निभाने की उम्मीद नहीं रखी, लेकिन खुद हर जगह बापू की ताकत बनकर उन्हें संघर्ष करने के लिए हिम्मत देती रही। गांधी जी ने दक्षिण अफ्रिका में भारतीयों के साथ हो रहे अत्याचार के खिलाफ आंदोलन छेड़ा था, उसमें कस्तूरबा गांधी की भूमिका बहुत अहम् थी। कस्तूरबा गांधी ने इसके लिए आवाज उठाई तो तीन महीने की जेल हो गई। महिला स्वतंत्रता सेनानी के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने नागरिक अधिकारों के लिये अंग्रेजों के खिलाफ आवाज उठाई, अपने पति की तरह सभी स्वतंत्रता सेनानियों के साथ मिलकर काम किया। वह एक ढृढ़ आत्मशक्ति वाली महिला थी और गांधी जी की प्रेरणा थी।

अरूणा आसफ अली : इन्होंने जंग–ए–आजादी को कर्मभूमि के रूप में स्वीकार किया। 1930 में नमक सत्याग्रह से उनके राजनीतिक संघर्ष की शुरूआत हुई। अंग्रेजों ने उन्हें एक साल के लिए जेल में कैद कर दिया। भारत छोडों आंदोलन व 9 अगस्त, 1942 को अरूणा आसफ अली ने गोवालिया टैंक मैदान में राष्ट्रीय झंडा फहराकर अगुवाई की। वह एक प्रबल राष्ट्रवाद आंदोलनकर्मी थी। उन्होंने लम्बे समय तक भूमिगत रहकर काम किया। 1998 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

बेगम हजरत महल : सन् 1857 ई में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने ब्रिटिश इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया। इन्होंने लखनऊ को अंग्रेजों से बचाने के लिय भरसक प्रयत्न किया और सक्रिय भूमिका निभाई। बेगम हज़रत महल की हिम्मत का इसी से अन्दाजा लगाया जा सकता है कि उन्होनें भटियाबुर्ज में जंगे आज़ादी के दौरान नजरबंद किये गये अपने पति वाजिद अजी शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ता में सेंध लगा दी थी।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में असख्य महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। आजादी का अमृत महोत्सव बिना इन वीरांगनाओं को श्रद्धाजंलि दिये बिना पूरा नहीं होगा। जिन्होनें आजादी की खातिर जान गंवा दी, कुर्बानी दे दी। शब्द सीमा होने के कारण कुछ ही वीरांगनाओं की संक्षिप्त पृष्ठभूमि से अवगत कराया गया है। पर भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजों के विरूद्ध कदम उठाने वाली वीरता, साहस और नेतृत्व का परिचय देने वाली असंख्य महिलायें है जैसै : सिस्टर निवेदिता, मीरा बेन, उषा मेहता, सावित्री बाई फुले, दुर्गाबाई देशमुख, एनी बिसेन्ट, कमला नेहरू, डॉ0 लक्ष्मी सहगल, सरोजनी नायडू, कमला देवी, चटोपाध्याय आदि महिलाओं के सामाजिक और शैक्षणिक दृष्टि से पिछड़े होने के बावजूद देश के स्वतंत्रता आन्दोलन में अदम्य साहस के साथ मुकाबला किया और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए इतिहास रचा।

निष्कर्ष :

आजादी का अमृत महोत्सव राष्ट्रीय गौरव और सम्मान से जुड़ा जन उत्सव मनाने का एक महत्वपूर्ण विजन है। यह महोत्सव पिछले 75 वर्षों में भारत द्वारा की गई तीव्र प्रगति का जश्न मना रहा है। इस अमृत महोत्सव को भारत सरकार अनेक गतिविधियों के माध्यम से अत्याधिक बढ़ावा दे रही है, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस उत्सव से जुड़ सके और जागरूक हो। यह उत्सव हमें अपनी छिपी ताकत को फिर से खोजने के लिये प्रोत्साहित करता है और हमें राष्ट्रों के समूहों में अपना सही स्थान हासिल करने के लिये सहक्रियात्मक कार्यवाई करने के लिए प्रेरित करता है। यह दुनिया में भारत के अद्वितीय योगदान को जीवंत करने में मदद करता है। आजादी के इस अमृत महोत्सव द्वारा नये दृष्टिकोणों, नये संकल्पों और आत्मनिर्भरता का विकास होगा। इसके अतिरिक्त भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन 1857–1947 ई0 तक भारत में ब्रिटिश शासन को समाप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है, स्वाधिनता संग्राम में सक्रिय भागीदारी से जुड़ी कुछ वीरागनांयों ने प्राण तक न्यौछावर कर दिया। उनकी इस स्वतन्त्रता आंदोलन में सहयोग के चलते ही आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे है। इसमें हम सबको अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी। जय हिन्द, जय भारत।

संदर्भ सूची :

- बाला, उषा (2006) भारत की वीरांगनायें प्रविसूप्रम भारत सरकार
- https://amritmahotsav.nic.in
- https://byjus.com/current-affairs
- https://innovateindia.mygov.in
- https://www.pmindia.gov.in
- https://pib.gov.in/press release page.aspx
- https://www.supportmeindia.com
- https://textbook.com